सांख्यिकी और भारतीय रिज़र्व बैंक*

दीपक मोहंती

गवर्नर डा.सुब्बाराव, प्रोफे. बिमल राय, प्रोफे. रिचर्ड स्मिथ, प्रोफे. बी.एल.एस. प्रकास राव, प्रोफे. शुभाशीष घोषाल, उप गवर्नर डा. पटेल, उप गवर्नर गण, सभी कार्यपालक निदेशकगण, श्री ए.बी. चक्रवर्ती, वित्तीय क्षेत्र एवं शैक्षिक जगत के गण्यमान्य अतिथिगण, प्रेस के सदस्यगण, सांख्यिकी तथा सूचना प्रबंध विभाग के सहयोगी मित्रो। इस सातवें सांख्यिकी दिवस सम्मेलन में मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

रिज़र्व बैंक में हम 2007 से ही प्रोफे. पी.सी. महालनोबिस के सम्मान में सांख्यिकी दिवस मना रहे हैं। प्रोफेसर महालनोबिस न केवल एक जानेमाने सांख्यिकीविद थे बल्कि एक महान दूरद्रष्टा भी थे। उन्हें भारतीय सांख्यिकीय प्रणाली के जनक के रूप में जाना जाता है। एक और जहां हम प्रोफे. महालनोबिस के उत्कृष्ट योगदान का सम्मान करते हैं, वहीं दूसरी ओर यह अवसर रिज़र्व बैंक में सांख्यिकी के और विकास के संबंध में फोकस करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर हो गया है।

प्रोफे. महालनोबिस, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान आइएसआइ के संस्थापक निदेशक थे। हमें प्रसन्नता है कि आज हमारे बीच आइएसआइ के दो निदेशक - प्रोफे. बिमल राय तथा प्रोफे.बी.एल.एस. प्रकास राव यहां उपस्थित हैं। प्रोफे. महालनोबिस ने कैंब्रिज में अध्ययन किया और उनके प्रारंभिक वर्ष वहीं बीते। हमें इस बात का हर्ष है कि प्रोफे. स्मिथ कैंब्रिज के एक अग्रणी अर्थमितिज्ञ, आज हमारे बीच उपस्थित हैं। वे नई पीढ़ी के सांख्यिकीविदों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक बार पुनः मैं अपने अतिथि वक्ताओं का स्वागत करता हूँ।

वर्ष 2013 सांख्यिकी के लिए और भी उल्लेखनीय वर्ष है क्योंकि इसे सांख्यिकी का अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया गया है। विश्वव्यापी इस घटना के मुख्य उद्देश्य, जिसे अनेक संगठनों का समर्थन मिला है, समाज के सभी पक्षों में सांख्यिकी की शक्ति और उसके प्रभाव के प्रति जनता की जागरूकता को बढ़ाना, एक व्यवसाय के रूप में सांख्यिकी को विकसित करना, विशेषकर नवयुवकों में, और संभावना एवं सांख्यिकी विज्ञान में सर्जनात्मकता तथा विकास को बढ़ावा देना है।

रिज़र्व बैंक में, हम सांख्यिकी को जन कल्याण के रूप मानते हैं। इससे जरूरी नहीं कि केवल हमारे निर्णय लेने में सहायता मिलती है, बल्कि नागरिकों को शक्ति संपन्न बनाने में भी यह सहायक है। हमारा सांख्यिकी विभाग एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उसने समष्टि वित्तीय सांख्यिकी को सबके लिए सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध करा दिया है, वह भावी सर्वेक्षण कर रहा है और मौद्रिक नीति निर्माण में सहयोग के लिए समष्टि आर्थिक परिवर्ती की पूर्वसूचना तैयार कर रहा है। यह विभाग बैंक के अन्य कार्यों में सांख्यिकी सहयोग भी प्रदान करता है।

हाल के वित्तीय संकट के समय सूचना उपलब्ध कराने और वैश्विक रूप से सांख्यिकीय अंतराल के संबंध में नए सिरे से फोकस करने की आवश्यकता है। इस विभाग ने अन्य अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया, जैसे आइएमएफ, जी20, बीआइएस तथा एफएसबी में। इससे हमारा वित्तीय सांख्यिकी सुदृढ़ हुआ और अंतरराष्ट्रीय स्तर की सर्वोत्तम प्रथा उन्होंने अपनाई।

विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों के होते हुए भी, चुनौतियां मौजूद हैं। उनमें तीन पर मैं फोकस करना चाहता हूँः

- बैंकों से छोटे-छोटे आंकड़ों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए?
- कंपनी वित्त सांख्यिकी का क्षेत्र एवं उनके कवरेज को कैसे बढ़ाए जाए?
- परिसंपत्ति मूल्य-सांख्यिकी का और विकास कैसे किया जाए?

पहला, नीति तथा अनुसंधान के लिए प्रायः आवृत्ति आधार पर बिखरे हुए छोटे-छोटे बैंकिंग आंकड़ों की जरूरत बढ़ गई है। उदाहरण के लिए, आधारभूत सांख्यिकीय विवरणियों (बीएसआर) के माध्यम से वार्षिक आधार पर जमा, ऋण तथा ब्याज दरों के संबंध में हम खाता स्तर पर आकड़े संग्रह करते हैं। मौद्रिक संप्रेषण को समझने के लिए ये आंकड़े एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। अतः, ज्यादा आवृत्ति आधार पर इन आंकड़ों को प्राप्त करना जरूरी है, कम-से-कम तिमाही आधार पर,बैंकों की स्रोत प्रणालियों से इलेक्ट्रानिक रूप से।

* 30 अगस्त 2013 को सांख्यिकी दिवस सम्मेलन, मुंबई में श्री दीपक मोहंती, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक की टिप्पणी ।

इसके अलावा, विभिन्न सांख्यिकीय विवरणियों के माध्यम से प्राप्त ऐसी मदों के बारे में आकड़ों में उल्लेखनीय अंतर दिखाई पड़े। अतः, बैंक के विभिन्न विभागों को प्रस्तुत की गई विभिन्न विवरणियों में आकड़ों की परिभाषा में समरूपता लाने की जरूरत है। इसके लिए सांख्यिकीयविदों तथा विनियामकों के बीच निकट का समन्वय अपेक्षित होगा ताकि आंकड़ों के अंतर की पहचान की जाए, उनमें समरूपता लाई जाए तथा उन्हें दूर किया जाए।

बैंकों की ओर से, कोर बैंकिंग समाधान के कार्यान्वयन ने बैंकों के लिए यह संभावना पैदा कर दी है कि वे सांख्यिकीय तथा पर्यवेक्षी दोनों प्रयोजनों के लिए छोटे-छोटे आकंड़ों को इलेक्ट्रानिक रूप से उन्हें सीधे अपनी स्रोत प्रणालियों से भेज सकते हैं। रिपोर्ट करने वाली संस्थाओं के लिए यह बात महत्त्वपूर्ण है कि वे हाथ से काम के अवरोध के बिना अब प्रोसेसिंग के जरिए सीधे अपना काम कर सकते हैं ताकि आंकड़ों में ईमानदारी बनी रहे। इससे विभिन्न विवरणियों की तर्कसंगतता में भी सहायता मिलेगी जिससे बैंकों पर रिपोर्टिंग का बोझ कम होगा। वास्तव में, जैसे-जैसे छोटी-छोटी संख्याएं बढ़ेगीं आंकड़ों का आकार बड़ा होता जाएगा। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज बड़े आंकड़ों के विषय में दो विशेष बातचीत यहां होगी जो हमारे आंकड़ों के विश्लेषण के लिए व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक होगी।

दूसरा, रिज़र्व बैंक उत्पादन, बिक्री तथा लाभप्रदता-जैसे कंपनी वित्त के संबंध में आंकड़े संग्रह कर रहा है। ये आंकड़े राष्ट्रीय स्तर पर कंपनी बचत एवं निवेश का सृजन करने के लिए भी प्रयोग किए जाएंगे। वित्तीय स्थिरता दृष्टिकोण से, कंपनी तुलन पत्र के आंकड़े प्रभावी एवं बिना सुरक्षावाली विदेशी करेंसी उधार राशियों-जैसे आकलन जोखिम पैरामीटरों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। कंपनी कार्यनिष्पादन आकड़े मूल्यनिर्धारण शक्ति के समष्टि आधार को समझने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं और इसीलिए मुद्रास्फीति के लिए ये गतिशील हैं। इसलिए, हमारे नमूना आकार को विस्तार देने और वित्तीय ब्योरों के कवरेज के लिए जरूरी हैं। हमें कंपनी कार्य मंत्रालय (एमसीए) के डाटाबेस से भी लिंक स्थापित करना चाहिए ताकि कंपनी सांख्यिकी के अपने कवरेज को हम बेहतर बना सकें।

तीसरा, परिसंपत्ति की कीमतें, विशेषकर घरेलू कीमतें, मौद्रिक संप्रेषण में अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण स्थान पा रही हैं। एक और जहां विकसित देशों में आवास वित्त के विकास का लंबा इतिहास रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत में औपचारिक वित्तीय क्षेत्र द्वारा आवास वित्त का विस्तार तुलनात्मक रूप से हाल की घटना है। मांग-आपूर्ति के अंतर को ध्यान में रखते हुए, हमारे अनुकूल की जनसांख्यिकी, बढ़ता हुआ शहरीकरण एवं विकास की संभावनाएं, आवास वित्त की मांग निरंतर बढ़ती रहेगी। इसी के साथ-साथ परिवार के लिए जोखिम भी बढ़ेगा और बैंक तुलन पत्रों में कीमतों में उतार-चढ़ाव भी दिखाई देगा तथा कारबार चक्र में परिवर्तन भी आएंगे। इसलिए, आवास वित्त के बारे में एक डाटाबेस विकसित करने की जरूरत है।

आवास वित्त के विषय में आंकड़ों की उपलब्धता सीमित रही है। हमारे यहां सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध आवास मूल्य सूचकांक (एचपीआइ) दो हैं : (i) एनएचबी - रेसिडेक्स 20 शहरों के लिए सर्वेक्षण-आधारित सूचना पर संगृहीत और आरआइबी-एचपीआइ-9 शहरों के लिए पंजीयन मूल्य पर आधारित। तथापि, व्यापक अर्थव्यवस्था के संबंध में आवास मूल्य के प्रभाव का आकलन करने के लिए मूल्य की तुलना में ऋण (एलटीवी) अनुपात, आय अनुपात की तुलना में समीकृत मासिक किस्त (ईएमआइ), आय अनुपात की तुलना में मूल्य, उधारकर्ताओं की विशिष्टताओं तथा संपत्ति क्रय-विक्रय के अन्य महत्त्वपूर्ण गुणों की तरह की सूचना ऐसी स्थिति में महत्त्वपूर्ण हो जाती है। आवास ऋण लेनदेन पर आधारित ऐसी सूचना, जो बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियां (एचएफसी) के पास उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए इस विभाग ने हाल ही में एक नया सांख्यिकीय सर्वेक्षण शुरू किया है। मुझे विश्वास है कि इस सर्वेक्षण को, सर्वेक्षण संबंधी हमारी तकनीकी परामर्शीदात्री समिति द्वारा इसकी जांच किए जाने के बाद, शीघ्र सार्वजनिक कर दिया जाएगा।

सांख्यिकी दिवस के इस अवसर पर, मैं अच्छा काम कर रहे सांख्यिकी विभाग के साथियों को बधाई देता हूँ। एक बार पुनः मैं अपने सभी वक्ताओं तथा अपने सभी आमंत्रित जनों का हार्दिक स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह सम्मेलन बौद्धिक सम्मेलन सिद्ध होगा।

धन्यवाद् ।